विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग दशम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:-20-01-2021(एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

पाठ:सप्तम: पाठनाम (सौहार्दं प्रकृते: शोभा)

नाट्यांश:-

सिंह:- तुष्णीं भव भो:। युवामपि मत्सदृशौ भक्षकौ न तु रक्षकौ ।एते वन्यजीवा: भक्षकं रक्षकपदयोग्यं न मन्यन्ते अत एव विचारविमर्श:प्रचलति ।

बक:- सर्वथा सम्यगुक्तम् सिंहमहोदयेन । वस्तुत: एव सिंहेन बहुकालपर्यन्तं शासनं कृतम् परमधुना तु कोऽपि पक्षी एव राजेति निश्चेतव्यम् अत्र तु संशीतिलेशस्यापि अवकाश: एव नास्ति।

शब्दार्था:-

तुष्णीं भव -चुप हो जाओ , विचारविमर्श: - सोच विचार

बहुकालपर्यन्तम् - बहुत समय तक , अवकाश: - स्थान

निश्चेतव्यम् - निश्चित करना चाहिए , संशीतिलेशस्य - थोड़े से भी संदेह का

अर्थ –

सिंह - अरे चुप हो जाओ ।तुमदोनों भी मेरे जैसे ही भक्षक हो रक्षक तो नही ।ये वन के जीव भक्षक को रक्षक के पद के योग्य नहीं मानते हैं , इसलिए बातचीत चल रही है ।

बगुला- शेर महोदय ने पूरी तरह से ठीक कहा है।वास्तव में शेर ने ही बहुत समय तक राज्य किया है, परंतु अब तो कोई पक्षी ही राजा बने ,ऐसा निश्चय करना चाहिए।यहां तो संशय का थोड़ा सा भी स्थान नहीं है।